Vaishno Devi Chalisa

॥ दोहा ॥

गरुड़ वाहनी वैष्णवी त्रिकुटा पर्वत धाम
काली, लक्ष्मी, सरस्वती, शक्ति तुम्हें प्रणाम

॥ चौपाई ॥

नमो: नमो: वैष्णो वरदानी, कलि काल मे शुभ कल्याणी।
मणि पर्वत पर ज्योति तुम्हारी, पिंडी रूप में हो अवतारी॥ 1 ॥

देवी देवता अंश दियो है, रत्नाकर घर जन्म लियो है।
करी तपस्या राम को पाऊँ, त्रेता की शक्ति कहलाऊँ॥ 2 ॥

कहा राम मणि पर्वत जाओ, कलियुग की देवी कहलाओ।
विष्णु रूप से कल्कि बनकर, लूंगा शक्ति रूप बदलकर॥ 3 ॥

तब तक त्रिकुटा घाटी जाओ, गुफा अंधेरी जाकर पाओ।
काली-लक्ष्मी-सरस्वती माँ, करेंगी पोषण पार्वती माँ॥ 4 ॥

ब्रह्मा, विष्णु, शंकर द्वारे, हनुमत, भैरों प्रहरी प्यारे।
रिद्धि, सिद्धि चंवर डुलावें, कलियुग-वासी पूजत आवें॥ 5 ॥

पान सुपारी ध्वजा नारीयल, चरणामृत चरणों का निर्मल।
दियो फलति वर माँ मुस्काई, करन तपस्या पर्वत आई॥ 6 ॥

कलि कालकी भड़की ज्वाला, इक दिन अपना रूप निकाला।
कन्या बन नगरोटा आई, योगी भैरों दियो दिखाई॥ 7 ॥

रूप देख सुंदर ललचाया, पीछे-पीछे भागा आया।
कन्याओं के साथ मिली माँ, कौल-कंदौली तभी चली माँ॥ 8 ॥

देवा माई दर्शन दीना, पवन रूप हो गई प्रवीणा।
नवरात्रों में लीला रचाई, भक्त श्रीधर के घर आई॥ 9 ॥

योगनि को भण्डारा दीनी, सबने रूचकिर भोजन कीना।
मांस, मदरिा भैरों मांगी, रूप पवन कर इच्छा त्यागी॥ 10 ॥

बाण मारकर गंगा निकिली, पर्वत भागी हो मतवाली।
चरण रखे आ एक शीला जब, चरण-पादुका नाम पड़ा तब॥ 11 ॥

पीछे भैरों था बलकारी, चोटी गुफा में जाय पधारी।
नौ मह तक कियो निवासा, चली फोड़कर कियो प्रकाशा॥ 12 ॥

आद्या शक्ति-ब्रह्म कुमारी, कहलाई माँ आद कुंवारी।
गुफा द्वार पहुँची मुस्काई, लांगुर वीर ने आज्ञा पाई॥ 13 ॥

भागा-भागा भैंरो आया, रक्षा हति निज शस्त्र चलाया।
पड़ा शीश जा पर्वत ऊपर, कियो क्षमा जा दियो उसे वर॥ 14 ॥

अपने संग में पुजवाऊंगी, भैंरो घाटी बनवाऊंगी।
पहले मेरा दर्शन होगा, पीछे तेरा सुमरिन होगा॥ 15 ॥

बैठ गई माँ पिण्डी होकर, चरणों में बहता जल झर झर।
चौसठ योगिनी-भैंरो बर्वत, सप्तऋषि आ करते सुमरन॥ 16 ॥

घंटा ध्वनि पर्वत पर बाजे, गुफा निराली सुंदर लागे।
भक्त श्रीधर पूजन कीन, भक्ति सेवा का वर लीन॥ 17 ॥

सेवक ध्यानूं तुमको ध्याना, ध्वजा व चोला आन चढ़ाया।
सिंह सदा दर पहरा देता, पंजा शेर का दु:ख हर लेता॥ 18 ॥

जम्बू द्वीप महाराज मनाया, सर सोने का छत्र चढ़ाया ।
हीरे की मूरत संग प्यारी, जगे अखण्ड इक जोत तुम्हारी॥ 19 ॥

आश्विन चैत्र नवरात्रे आऊँ, पिण्डी रानी दर्शन पाऊँ।
सेवक “कमल” शरण तिहारी, हरो वैष्णो विपत हमारी॥ 20 ॥

॥ दोहा ॥

कलियुग में महिमा तेरी, है माँ अपरंपार
धर्म की हानि हो रही, प्रगट हो अवतार